(1)

BA-(H)
पार्ट - II
मैथिली प्रतिष्ठा
पेपर - तेसर

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

हरिमोहन झाक 'उपन्यासक वैशिष्ट्य:-

हरिमोहन झाक दूटा उपन्यास प्रकाशित छनि - 'कन्यादान' आ 'द्विरागमन' कन्यादान हरिमोहन झाक चर्चित कृति थिक। 1933 ई० मे पुस्तकाक रूपमे सँ पूर्व एकर आरम्भिक किछु अंश 'मिथिला' नामक पत्रिका मे 1929 ई० मे सर्वप्रथम प्रकाशित लिखल गेल। एहि बातक रहस्योद्घाटन लेखक स्वयं प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन 1956 क कथा-विभागक अध्यक्ष भाषण मे कयने छथि। मिथिलाक लोकप्रियता देखि ई विचार भेल जे पाठक गणक कौतूहल कायम रखबाक एकटा धारावाहिक उपन्यास एहि मे बहराय। पाठकक आशा-आकांक्षा आ मानसिक भूख के हल छड़ कन्यादान। साहित्य आ पाठकक बीच नेहक सम्बन्ध कायम कयलक जे एकर प्रभाव मैथिली साहित्य शिक्षा जन्य अनमेल विवाहके एहि उपन्यास मे देखाओल गेल अछि। नारी शिक्षा दिस मैथिल समाजक ध्यान आकृष्ट करब एहि उपन्यास मे देखाओल गेल अछि। एकरा रेखांकित करैत मैथिली साहित्यक इतिहासकार डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि- " मैथिली साहित्य

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

कें लोकप्रिय अवस्था मे प्रो० हरिमोहन झाक कन्यादान क बड़ महत्वपूर्ण स्थान अछि। एहि से मैथिली भाषा-भाषी शिक्षित जनसमुदायक ततबा मनोरंजन कैल, ततबा मैथिली साहित्यक कोनहु अन्य पोथि सँ नहि।"

कोनो उपन्यासक सफलता ओकर तत्वक सुसमन्वय पर आधारित अछि। कथानक, चरित्र, कथोपकथन, वातावरण, भाषा शैली आ उद्देश्य इत्यादि छओ-गोटे तत्वक सुन्दर मिश्रण उपन्यासक लेल आवश्यक अछि।

उपर्युक्त औपन्यासिक तत्वसभक दृष्टिएँ देखला सँ ई बात घोर आश्चर्यजनक लगैत अछि जे एकर कथानक बड़ छोट अछि आ सेहो अत्यन्त मंथर गतिसँ आगू बढ़ैत अछि। चण्डीश्वरण मिश्र (सी० सी० मिश्र) अंग्रेजी शिक्षा मे ततेक रंगि गेल छथि जे हुनका अपन समस्त संस्कार-संस्कृति, सामाजिकता, चालि-चलन अनसोहात लागए लगैत छनि किन्तु हुनक विवाह भऽ जाइत छनि मिथिलाक एक अशिक्षित कन्या बुच्चीदाइ सँ। दुनू संस्कार मे आकाश-पातालक अन्तर अछि। परिणाम ई होइत अछि जे सी० सी० मिश्र चतुर्थीक रातिए पड़ा जाइत छथि।

'कन्यादान' मे प्रो० हरिमोहनक भाषाक-शैली सेहो अद्वितीय अछि। एकर वर्णन-शैली एवं भाषा सौष्ठवक प्रसंग मे डा० आनन्द पाठकक मत छनि — "कन्यादानक लेखक अपन स्वाभाविक वर्णन शक्तिक कारणेँ समालोचकक ध्यान आकृष्ट करैत छथि।" वस्तुतः हरिमोहन झा मैथिलीक पहिल उपन्यासकार

कोबि, प्रतिरु रचना शिल्प एंव विषय दुहू दृष्टिएँ आकर्षक अछि। लोकोक्तिक प्रयोग, शब्द-चयन, भाषाक गत्यशीलता तँ आकर्षक अछि। मैथिलीक परिष्कृत एंव उपन्यासक हेतु स्वाभाविक गद्यक स्वरुप दर्शन 'कन्यादान' सँ होबऽ लगैत अछि।"

'कन्यादान' क प्रकाशनक 10 वर्ष बाद अर्थात् 1943 ई० मे प्रो० हरिमोहन झा अपन दोसर उपन्यास "द्विरागमन" लऽ उपस्थित भेलाह। एहि उपन्यासक प्रकाशन पाछाँ लेखकक अपेक्षा छलनि - "चारुकात सँ मित्र मण्डलीक तगादा होमय लागल जे बुच्ची दाइक द्विरागमन सेहो करा दिऔन्ह। अगत्या हमरा बलधकेल द्विरागमन कराबय पड़ल, यद्यपि ओ हमरा मनोनुकूल नहि। 'कन्यादान' समस्यामूलक उपन्यास अछि आ ओकर अन्त छैक प्रश्नवाचक चिह्नमे। द्विरागमन मे ओहि प्रश्नक समाधान नहि होइत छैक। ताहि दिन मैथिली मे एकटा नव उपन्यास बहरायब तऽ तहिना लगैक जेना साँझक आकाशमे एकटा तारा उगल होइ।"

Sarvjit Kumar
05/08/20